International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

कला और संस्कृति का डिजिटलीकरण: छोटानागपुर क्षेत्र के विशेष संदर्भ में

Akanksha Deo

पूर्व छात्रा राजनीति विज्ञान विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड।

अमूर्त

इस पत्र का उद्देश्य छोटानागपुर क्षेत्र की कला और संस्कृति का डिजिटलीकरण" विषय पर अध्ययन करना है की किस प्रकार डिजिटल तकनीक पारंपरिक कला और संस्कृति के संरक्षण, प्रचार और प्रसार पर प्रकाश डालता है। डिजिटलीकरण ने कला और संस्कृति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव लाए हैं। पहले जहां सांस्कृतिक धरोहर, शिल्प, और पारंपरिक कला रूपों का संरक्षण कठिन था, वहीं अब डिजिटल तकनीक ने इन्हें संरक्षित करने, प्रचारित करने और वैश्विक स्तर पर साझा करने के नए अवसर प्रदान किए हैं। छोटानागपुर जो भारत के झारखंड राज्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, अपनी समृद्ध और विविध सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र आदिवासी संस्कृति, परंपराओं, और कला के दृष्टिकोण से विशेष है। छोटानागपुर की कला और संस्कृति स्थानीय जनजीवन, धार्मिक विश्वासों, जीवनशैली और प्राकृतिक संसाधनों से गहरे रूप से जुड़ी हुई है। डिजिटलीकरण के माध्यम से छोटानागपुर की समृद्ध कला और संस्कृति को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया जा सकता है। डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया, और ऑनलाइन संग्रहालयों का उपयोग स्थानीय कलाकारों को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचाने में मदद करता है, जिससे उनकी कला को वैश्विक पहचान मिलती है और वे आर्थिक रूप से सशक्त होते हैं। इसके अलावा, डिजिटल रूप में सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण भी होता है, जिससे ये समय के साथ समाप्त नहीं होतीं और आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाई जा सकती हैं। डिजिटलीकरण से युवा पीढ़ी को इन पारंपरिक कला रूपों में रुचि बढ़ाने और उनसे जुड़ने का अवसर मिलता है। हालांकि डिजिटलीकरण के फायदे स्पष्ट हैं, लेकिन इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हो सकते हैं। सबसे बड़ा खतरा यह है कि पारंपरिक कला और शिल्प की वास्तविकता और भावना डिजिटल माध्यमों में पूरी तरह से व्यक्त नहीं हो सकती, जिससे सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास हो सकता है। इसके अलावा, डिजिटल सामग्री का प्रसार स्थानीय कलाकारों के अधिकारों का उल्लंघन कर सकता है, क्योंकि उन्हें

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

अपनी कला का उचित मूल्य और श्रेय नहीं मिल पाता। साथ ही, डिजिटलीकरण के कारण पारंपरिक कला रुपों में बदलाव आ सकता है, जिससे उनकी पहचान और अस्तित्व पर संकट पैदा हो सकता है। कला और संस्कृति का डिजिटलीकरण एक द्वंद्वात्मक प्रक्रिया है, जिसमें इसके फायदे और चुनौतियाँ दोनों हैं। हालांकि डिजिटलीकरण कला और संस्कृति के संरक्षण, प्रसार और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए एक प्रभावी उपकरण बन सकता है, लेकिन इसके साथ जुड़े नकारात्मक प्रभावों को समझना और उन पर काम करना आवश्यक है। इस पत्र का उद्देश्य कला और संस्कृति के डिजिटलीकरण की प्रक्रिया को समझना और इस क्षेत्र में आने वाली संभावनाओं और चुनौतियों पर विचार करना है।

परिचय

डिजिटलीकरण, किसी भी प्रकार की सूचना, दस्तावेज़ या कलाकृति को डिजिटल रुप में परिवर्तित करने की प्रक्रिया है। इसमें पारंपरिक माध्यमों से डिजिटल फॉर्मेट में परिवर्तन शामिल होता है, जिससे जानकारी को संग्रहीत, साझा और पुनःप्राप्त करना सरल और त्वरित होता है। डिजिटल तकनीक के माध्यम से लोक संस्कृति, परंपराएँ और जीवन मूल्य व्यापक रुप से फैलाए जा सकते हैं। यह न केवल सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करता है, बल्कि युवाओं में सांस्कृतिक जागरुकता भी बढ़ाता है। इंटरनेट और सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स के माध्यम से लोक कथाएँ, गीत, नृत्य और अन्य सांस्कृतिक तत्व साझा किए जा सकते हैं, जिससे विभिन्न समुदायों के बीच समझ और सम्मान बढ़ता है।

छोटानागपुर क्षेत्र में प्रमुख रुप से उरांव, मुंडा, हो, संथाल, और खड़िया जैसी जनजातियाँ निवास करती हैं। इन समुदायों की परंपराएँ उनकी सामाजिक संरचना, रीति-रिवाज, और जीवनशैली में स्पष्ट रुप से परिलक्षित होती हैं। **लोक कला:** इन जनजातीय समुदायों की लोक कला में चित्रकला, मूर्तिकला, और हस्तशिल्प शामिल हैं। उदाहरण के लिए, मुंडा जनजाति की "पैंटिंग" में प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके दीवारों पर चित्र बनाए जाते हैं, जो उनकी दैनिक जीवन और विश्वासों को दर्शाते हैं।**संगीत और नृत्य:** आदिवासी संगीत और नृत्य उनकी सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न हिस्सा हैं। "नृत्य" जैसे "छऊ नृत्य" और "करमा नृत्य" विशेष रुप से प्रसिद्ध हैं, जो सामूहिक उत्सवों और अनुष्ठानों में आयोजित किए जाते हैं। **रॉक आर्ट** छोटानागपुर क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर प्राचीन गुफाओं में रॉक पेंटिंग पाए गए हैं। ये चित्र शिकार, दैनिक जीवन, और धार्मिक अनुष्ठानों से संबंधित होते हैं, जो प्राचीन मानव सभ्यता की समझ प्रदान करते हैं। क्षेत्र में मेगालिथिक स्मारक, जैसे बड़े पत्थरों की संरचनाएँ, देखी जा सकती हैं। ये स्मारक प्राचीन काल में दफन संस्कार और अन्य अनुष्ठानों से संबंधित थे, जो आज भी स्थानीय समुदायों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स पर छोटानागपुर क्षेत्र की सांस्कृतिक सामग्री की उपलब्धता से दुनिया भर के लोग इन जनजातीय कलाओं से परिचित हो सकते हैं। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है और वैश्विक समझ को सुदृढ़ करता है। उदाहरण के लिए, मुंडा जनजाति की चित्रकला और संथाल नृत्य को ऑनलाइन साझा किया जा रहा है, जिससे वैश्विक स्तर पर उनकी पहचान बढ़ रही है।

डिजिटलीकरण के माध्यम से शोधकर्ताओं और छात्रों को छोटानागपुर क्षेत्र की कला और संस्कृति पर आधारित डिजिटल संसाधन उपलब्ध हो रहे हैं। यह शैक्षणिक और शोध कार्यों में सहूलियत प्रदान करता है, जिससे अध्ययन और अनुसंधान में गुणवत्ता और गति में वृद्धि हो रही है।

1. **संग्रहालयों और कला दीर्घाओं की ऑनलाइन प्रस्तुति:**

डिजिटल तकनीकों के माध्यम से छोटानागपुर क्षेत्र के संग्रहालयों और कला दीर्घाओं की वस्तुओं को ऑनलाइन प्रदर्शित किया जा रहा है। यह पहल स्थानीय और वैश्विक दर्शकों को क्षेत्र की कला और संस्कृति से परिचित कराने में सहायक है। उदाहरण के लिए, रांची के झारखंड राज्य संग्रहालय ने अपनी कई कलाकृतियों की डिजिटल प्रदर्शनी शुरू की है, जिससे लोग दूर से ही इनका अवलोकन कर सकते हैं।

2. **सांस्कृतिक कार्यक्रमों का लाइव प्रसारण और रिकॉर्डिंग:**

स्थानीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों, जैसे नृत्य, संगीत और नाटक, का लाइव प्रसारण और रिकॉर्डिंग डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स पर किया जा रहा है। इससे कार्यक्रमों की पहुंच बढ़ती है और लोग विभिन्न स्थानों से इनका आनंद ले सकते हैं। उदाहरण के लिए, "झारखंड कला परिषद" फेसबुक पेज पर राज्य के विभिन्न हिस्सों से लाइव कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है।

3. **सांस्कृतिक सामग्री के लिए मोबाइल ऐप्स और वेबसाइट्स का विकास:**

डिजिटल तकनीकों के माध्यम से सांस्कृतिक सामग्री को सुलभ बनाने के लिए मोबाइल ऐप्स और वेबसाइट्स विकसित की जा रही हैं। इन प्लेटफ़ॉर्म्स पर क्षेत्रीय गीत, कथाएँ, चित्रकला और अन्य सांस्कृतिक सामग्री उपलब्ध है। उदाहरण के लिए, "Jharkhand Tourism" मोबाइल ऐप पर राज्य की सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित जानकारी और मीडिया सामग्री उपलब्ध है।

डिजिटलीकरण ने छोटानागपुर क्षेत्र की कला और संस्कृति के संरक्षण और प्रसार में कई सकारात्मक बदलाव लाए हैं, लेकिन इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए हैं:- डिजिटलीकरण के माध्यम से कला और सांस्कृतिक उत्पादों की ऑनलाइन उपलब्धता बढ़ी है, जिससे कभी-कभी पारंपरिक कलाओं का व्यावसायिकीकरण होता है। इससे उनकी

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

मौलिकता और सांस्कृतिक संदर्भ में कमी आ सकती । डिजिटल सामग्री तक पहुँच के लिए इंटरनेट कनेक्टिविटी और स्मार्ट उपकरणों की आवश्यकता होती है। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में इन सुविधाओं की कमी के कारण सांस्कृतिक सामग्री तक पहुँच में असमानता बढ़ सकती है, जिससे डिजिटल डिवाइड और सामाजिक असमानता हो सकती है। **सांस्कृतिक संदर्भ की हानि**: ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म्स पर सांस्कृतिक सामग्री का प्रसार करते समय, स्थानीय संदर्भ, परंपराएँ और मूल्य अक्सर उपेक्षित हो जाते हैं। इससे सांस्कृतिक सामग्री का गलत या सतही प्रस्तुतीकरण हो सकता है, जो सांस्कृतिक विरासत की वास्तविकता को विकृत कर सकता है। **सुरक्षा और गोपनीयता संबंधी चिंताएँ:** डिजिटलीकरण के साथ सांस्कृतिक सामग्री की सुरक्षा और गोपनीयता संबंधी चिंताएँ बढ़ गई हैं। अनधिकृत उपयोग, चोरी और गलत उपयोग से सांस्कृतिक विरासत को नुकसान पहुँच सकता है। **सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों में बदलाव:** डिजिटल माध्यमों पर कला और संस्कृति की प्रस्तुति से व्यक्तिगत और सामुदायिक इंटरैक्शन में कमी आ सकती है। पारंपरिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों और मेलों की जगह ऑनलाइन गतिविधियों ले सकती हैं, जिससे सामाजिक संबंधों में बदलाव हो सकता है।

निष्कर्ष

छोटानागपुर क्षेत्र की कला और संस्कृति का डिजिटलीकरण एक महत्वपूर्ण और समग्र प्रक्रिया है, जो इस समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को आधुनिक तकनीकों के माध्यम से संरक्षित और प्रसारित करने में सहायक है। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स पर कला और सांस्कृतिक सामग्री की उपलब्धता से दुनिया भर के लोग विभिन्न संस्कृतियों से परिचित हो सकते हैं, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलता है और वैश्विक समझ को सुदृढ़ किया जा सकता है। हालाँकि, इस प्रक्रिया में तकनीकी, सांस्कृतिक और सामाजिक चुनौतियाँ भी सामने आती हैं, जैसे इंटरनेट, अवसंरचना की कमी, उच्च गुणवत्ता वाले उपकरणों की उपलब्धता, डिजिटल साक्षरता की कमी, सांस्कृतिक समाधानों और रणनीतियों को लागू करना आवश्यक है, ताकि डिजिटलीकरण के माध्यम से छोटानागपुर क्षेत्र की कला और संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन सुनिश्चित किया जा सके। अंततः, डिजिटलीकरण के माध्यम से छोटानागपुर क्षेत्र की कला और संस्कृति को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने और संरक्षित करने के प्रयासों से न केवल स्थानीय समुदाय की पहचान और गर्व में वृद्धि होगी, बल्कि यह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक विविधता के सम्मान और समझ को भी बढ़ावा देगा।

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

सन्दर्भ

I. डिजिटल युग में लोक संस्कृति,मानवीय मूल्य एवं आंचलिक साहित्य :-गोपी चंद चौरसिया dec 30,2024
II. साहित्य संस्कृति और डिजिटली तकनीक :- बालेन्दु शर्मा दाधीच 2023
III. संकट व संक्रमण के दौर से गुजर रही झारखण्ड की कला और संस्कृति :- मनोज कपरदार march 20 ,2023
IV. आदिम मुंडा और उनका प्रदेश :- डॉ राज रतन सहाय
V. द ओरांस ऑफ़ छोटानागपुर :- सरत चन्द्र राय
VI. डिजिटल इंडिया ए सोसिओ इकनोमिक ट्रांसफॉर्म :- डॉ राजीव सिंजरिया,राहुल शर्मा
VII. देशज भाषाओ और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण:- pib delhi, 10 feb 2025